यों केतिक ग्वाही देऊं कुरान, इन्ना इन्जुलना में एह बयान।
तीसरे तकरार की भई फजर, अग्यारैं सदी में देखो नजर।। ३७ ।।

कुरान की मैं कितनी गवाही दूं। इन्ना-इन्जुलना में मेहर उतरने की हकीकत लिखी है। लैल के तीसरे भाग जागनी की लीला में कुलजम सरूप के ज्ञान से ग्यारहवीं सदी में अज्ञानता का अन्धकार मिटकर सवेरा होगा।

और पेहेले सिपारेमें जो लिखी, सो तुम क्या नहीं देखी।
साहेदी कुंन की देवे जोए, खास उमत का कहिए सोए।। ३८ ।।

कुरान के पहले सिपारे में जो लिखा है वह क्या तुमने नहीं देखा? मूल-मिलावा में श्री राजजी महाराज ने इश्क रब्द के बाद कुंन शब्द कहकर संसार को बनाने का आदेश दिया। उस समय की श्री श्यामाजी महारानी और रूहें अब गवाही देते हैं। यही मोमिन हैं।

अब जो कोई होवे खास उमत, देवे ग्वाही सो होए साबित।
उड़ाए गफलत हो सावधान, छोड़ो पढ़ों का गुमान।। ३९ ।।

अब जो भी खास उम्मत मोमिनों में से हों, वह मूल-मिलावा की इस बात की गवाही दें। दुनियां के पढ़े-लिखे लोगों के अहंकार को तोड़कर उनकी भ्रान्तियां दूर करो और उनको सावचेत करो।

हकुल्यकीन और सुंनी जोए, पेहेले ईमान ल्यावेगा सोए।
पीछे जाहेर होसी साहेब, तब तो ईमान ल्यावेंगे सब।। ४० ।।

अब यह ब्रह्मसृष्टियां (मोमिन) ही यकीन वाले हैं। सुंनत जमात सुनकर ईमान लाने वाले कहलाते हैं। यही सबसे पहले इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के ऊपर ईमान लाएंगे। कुलजम सरूप की वाणी से जब प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान हो जाएगी तो फिर सभी ईमान लाएंगे।

भिस्त दोजख जाहेर भई, नफा किसीको न देवे कोई।
ले हिरदे हादी के पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए।। ४१ ।।

महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि श्री प्राणनाथजी की वाणी ने कयामत के सभी निशान जाहिर कर दिए हैं और अब दुनियां वालों को बहिश्त और दोजख की पहचान हो गई है। अब न्याय का दिन आ गया है और सबको अपनी करनी का फल मिलेगा। कोई किसी की मदद न कर सकेगा, इसलिए श्री प्राणनाथजी महाराज के चरणों में ध्यान लगाकर मैं सारे संसार को सावचेत (सावधान) कर रहा हूं।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ४१ ॥

एक तो कहे अल्ला कलाम, जाहेरी माएनों का नाहीं काम।
दूजे तो इसारत कही, इत हुज्जत काहूकी ना रही।। १ ।।

कुरान को अल्लाह की वाणी कहा है, इसलिए इसके जाहिरी मायने लेने से इसके रहस्य का पता नहीं चलेगा। कुरान में जो बातें कही हैं वह सब इशारतों में कही गई हैं जिनको रूहों (मोमिनों) के अतिरिक्त कोई नहीं कह सकता कि मैंने समझ लिया है।

तीसरे जंजीरों करी जिकर, पोहोंचे न चौदे तबकों की फिकर।
सोए परोवनी मोतियों माहें, खुदा बिन दावा किनका नाहें।। २ ।।

तीसरी खास बात यह है कि कुरान में अलग-अलग आयतों में अलग-अलग किस्सों के रूप में हकीकत कही है जो चौदह तबक की दुनियां वाले नहीं समझ सकते। इसे केवल खुदा ही जानता है, इसलिए उनकी इस वाणी को जिन्हें परमधाम के मोती कहा है, उनके दिल में बैठाना है।

Nijanand App

केहेलावें काजी पढ़े कुरान, अल्ला रसूल ना उमत पेहेचान।
ना कुरान ना आप चिन्हार, अहेल किताब यों कहावें दीनदार।। ३ ।।

दुनियां में कुरान के पढ़ने वाले अपने को काजी कहते हैं, परन्तु न तो उनको अल्लाह की, रसूल की और मोमिनों की पहचान है और न उन्हें कुरान की। न अपने आपकी पहचान है, परन्तु वह अपने को कुरान का वारिस कहकर दावा लेते हैं।

जाहेरी माएने लिए अंधेर, जाको लानत लिखी बेर बेर।
ढांपे कुरान की रोसनाई, अंदर सैतानें एही सिखाई।। ४ ।।

कुरान में साफ लिखा है कि जो अज्ञान से जाहिरी अर्थ करेंगे, उनको लानत लगेगी। उन सबके अन्दर शैतान अबलीस बैठा है जो कुरान के ज्ञान को ढक रहा है (जाहिर नहीं होने देता)।

दिल पर दुस्मन हुआ पातसाह, मारी दीन इसलाम की राह।
हुए हिरस हवा के बंदे, किए सैताने देखीते अंधे।। ५ ।।

दुनियां के दिलों पर दुश्मन अबलीस की बादशाही है जो लोगों को धर्म की राह पर नहीं चलने देता। उसने सबको माया की चाहना में भटका रखा है और इसलिए पढ़े-लिखे लोग अबलीस के कारण अंधेरे की तरफ चल रहे हैं।

सब अंगों बैठा दुस्मन जोर, दिलके दीदे दिए फोर।
दुस्मनें ना छोड़्या कोई ठौर, चौदे तबकों इनकी दौर।। ६ ।।

दुनियां में लोगों के रोम-रोम पर शैतान अबलीस बैठा हुआ है और इसने सबके दिल की आंखों को फोड़ दिया है, अर्थात् सबके सोचने की शक्ति समाप्त कर दी है। यह शैतान अबलीस इतना शक्तिशाली है कि इसने चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में कहीं जरा भी ठिकाना नहीं छोड़ा।

उबरीं एक रूहें उमत, दूजी गिरो फरिस्तोंकी इत।
जिनमें इमाम हुआ आखिरी, हिंदू फकीरोंमें पातसाही करी।। ७ ।।

इस शैतान के पंजे से ब्रह्मसृष्टियां ही निकल सकीं और दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि ही बच कर निकलीं। इन ब्रह्मसृष्टियों और ईश्वरीसृष्टियों में आखिर के समय श्री प्राणनाथजी महाराज की साहेबी हुई। कुरान में इनकी हिन्दू फकीरों में बादशाही करना, लिखा है।

देखाई राह तौरेत कुरान, कुफर सबों का दिया भान।
ल्याया नहीं जो आकीन, सो जल दोजख आए मिने दीन।। ८ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज ने तौरेत और कुरान, अर्थात् कलस और सनंध की वाणी से सबको सच्चा रास्ता दिखाया और सभी का अज्ञान मिटा दिया। इनके ऊपर जो यकीन नहीं लाया वह पहले पश्चाताप की अग्नि में जलेगा और फिर निजानन्द सम्प्रदाय में आएगा।

जो थी चौदे तबकों अंधेर, भान्यो सैतानी उल्टो फेर।
कराया सबों को सिजदा, जाहेर किया जो साहेब है सदा।। ९ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने चौदह तबक में फैले अज्ञान को मिटाया और शैतान अबलीस जो सबको उल्टा भटका रहा था, उसे समाप्त किया और फिर अखण्ड परमधाम में विराजमान श्री राजजी महाराज की पहचान कराकर सभी से सिजदा कराया।

Nijanand App

खास गिरो नूरजमाल में लई, नूरजलाल ठौर दूजी को दई।
तीसरी जो सब दुनियां कही, करी नूर नजर तले सही।। १० ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने ब्रह्मसृष्टियों को परमधाम में लिया। दूसरी जमात ईश्वरीसृष्टि को अक्षरधाम का ठिकाना दिया और तीसरी जमात जीवसृष्टि को अक्षर की नजर के नीचे योगमाया में आठ प्रकार की बहिश्तों में कायमी दी।

भिस्तां बांट दइयां इन बिध, काम सबोंके किए यों सिध।
कहे छत्ता जो पेहेले ल्यावे ईमान, खास उमतका सोई जान।। ११ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज ने इस तरह से सब जीवों को उनकी करनी के हिसाब से बहिश्तें बांटकर सबको अखण्ड कर दिया और उनके सभी काम पूरे कर दिए। महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के ऊपर जो पहले ईमान लाएगा, वही परमधाम की खास ब्रह्मसृष्टि है।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ५२ ॥

लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे।
कहे मक्के के काफर, आराम करते बीच घर।। १ ।।

कुरान के चौथे सिपारे में लिखा है कि खुदा ने ब्रह्मसृष्टियों की जमात को सब तरह के अखण्ड सुख दे रखे हैं, इसलिए यह माया के सुख नहीं चाहते। इस ठिकाने पर और लिखा है कि मक्का जो खुदा का घर है, उसके दावेदारों को दीन (धर्म) की चिन्ता नहीं है। वह घर में बैठकर आराम से दुनियां के सुख भोगते हैं। यहां नौतनपुरी में खुदा के स्वरूप श्री देवचन्द्रजी श्यामा महारानी हैं। उनके वारिस बिहारीजी ने चाकले मन्दिर की गद्दी ली है। उन्हें दीन (धर्म) पर यकीन नहीं है और प्राणनाथजी से मुनकिरी है। सुन्दरसाथजी जो पैसा चढ़ाते हैं उससे वह ऐशो-आराम करते हैं।

जो पूजें मक्के के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर।
और जिनको खुदाए की पेहेचान, सहें दुख न छोड़ें ईमान।। २ ।।

श्री बिहारीजी महाराज जो काले पत्थर के समान कठोर हृदय वाले थे। सुन्दरसाथ की उस समय के गादी पूजक समाज ने इनको ही देवचन्द्रजी के समान मान लिया है और खास जो मोमिन हैं वे श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी को मानकर अपने घर परिवार को छोड़कर साथ में चल दिए और दिल्ली, उदयपुर, मन्दसौर, औरंगाबाद, रामनगर, आदि जगह-जगह पैदल चलकर लाखों कष्ट सहे, परन्तु उन्होंने अपने ईमान को नहीं छोड़ा।

तिनकी तसल्ली के कारण, महंमद को हुआ इजन।
और इसलाम कहे दरवेस, कही खास उमत इन भेस।। ३ ।।

इन मोमिनों के वास्ते ही परमधाम का सुख देने के लिए श्री प्राणनाथजी को कुलजम सरूप की वाणी से सुन्दरसाथ को सुख देने का आदेश श्री राजजी महाराज ने दिया। इन मोमिनों को दरवेश (फकीर) कहा है, अर्थात् दुनियां से वैर करने वाले और खुदा से प्रेम करने वाले फकीर कहा है। खासलखास मोमिन इस तरह के फकीरी भेष में रहते हैं।

याकी मुराद कही इसलाम, यों कह्या माहें अल्ला कलाम।
कोई कर ना सके भेव, जो महंमदको देवें फरेब।। ४ ।।

कुरान की हदीसों में कहा है कि ईमानदार मोमिन सदा ही दीन (धर्म) की इच्छा रखते हैं। जो काफिर हैं, वह श्री कुलजम सरूप की वाणी पर नहीं चलते। इस वास्ते वह कहते हैं कि श्री प्राणनाथजी के पास

Nijanand App